रिकार्ड– यह वक्त जा रहा है..... ओमशांति प्रातःक्लास 29.12.67

ओमशांति। रुहानी बाप रुहानी बच्चों प्रति कहते हैं मीठे2 बच्चों। जैसे लौकिक बाप को बच्चे प्यारे लगते हैं वैसे बेहद के बाप को भी बेहद के बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। बाप बच्चों को शिक्षा समझानी देते हैं कि कहां उंच पद पाओ। यह बाप की चाहना रहती है। तो बेहद के बाप को भी यह अच्छी रहती है। बच्चों को ज्ञान से श्रृंगारते हैं। तुमको दोनों बाप बहुत अच्छी रीति श्रृंगारते हैं कि बच्चे उंच पद पायें। लौकिक बाप भी खुश तो पारलौकिक बाप भी खुश होते हैं। जो अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं उन्हों को देखकर बाप खुश होते हैं। गाया भी जाता है फालो फादर। तो दोनों को फालो करना पड़े। एक है रुहानी बाप। दूसरा फिर यह फादर। तो पुरुषार्थ कर उंच पद पाना है। तुम जब भट्ठी में थे तो सबका ताज सहित फोटो निकला था। बाप ने यह तो समझाया है लाइट का ताज कोई होता नहीं। एक निशानी है प्योरिटी की। सभी को देते हैं। ऐसे नहीं कोई सफेद लाइट का ताज होता है। यह पवित्रता की निशानी समझाई जाती है। पहले2 तुम पवित्र रहते हो। सतयुग आदि में तुम ही थे ना। बाप भी कहते हैं आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम बच्चे ही पहले आते हो। फिर पहले ही जाना है। बाप बच्चों को श्रृंगारते हैं। पियर घर में बनवा में रहते हो। इस समय तुमको भी साधारण रहना है। न उंच न नीच। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूं। कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कह सकते। मनुष्य–मनुष्य की सदगति कर न सके। सदगति तो सतगुरू ही करते हैं। मनुष्य 60वर्ष के बाद वानप्रस्थ लेते हैं। फिर गुरू करते हैं। यह भी रसम अभी की है, जो फिर भक्तिमार्ग में चली आती है। आजकल तो छोटे बच्चे को भी गुरू करा देते हैं। भल वानप्रस्थ अवास्था है ;परंतु अचानक मौत तो आ जाता है ना। इसलिए बच्चों को भी गुरू करा देते हैं। जैसे बाप कहते हैं तुम सभी आत्माओं का हक है वर्सा पाने का। वह कह देते हैं गुरू बिगर ठौर न पावेंगे अर्थात् ब्रह्म में लीन नहीं होंगे। तुमको तो लीन नहीं होना है। तुम आत्माएं ब्रह्मांड में निवास करती हो। बाप समझाते हैं आत्माएं कोई अंडे मिसल नहीं हैं। यह भक्तिमार्ग के अक्षर हैं। आत्मा तो स्टार बिंदी है। बाप भी बिंदी ही है। उस बिंदी को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। तुम भी छोटी आत्मा हो उनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। तुम फील करते हो। पास विद ऑनर तो होना ही है। ऐसे नहीं कि शिवलिंग कोई बड़ा है। जितना आत्मा है उतना ही परमात्मा है। उसको कहा जाता है परमधाम में रहने वाली आत्मा। जहां से फिर आते हैं पार्ट बजाने। बाप कहते हैं मैं भी आता हूं ;परंतु मुझे अपना शरीर नहीं है। मैं रूप भी हूं, बसंत भी हूं। आत्मा रूप है उसमें सारा ज्ञान है। वर्सा बरसाते हैं। सभी मनुष्य पापात्मा से पुण्यात्मा बन जाते हैं। बाप गति सदगति दोनों देते हैं। तुम सदगति में जाते हो तो बाकी सब गति में जाते हैं अर्थात् अपने घर। वह है स्वीटहोम। आत्मा ही इन कानों द्वारा सुनती है। सब कुछ करती है। अब बाप कहते हैं मीठे2 सिकीलधे .....बच्चों वापस जाना है। इसके लिए पवित्र जरूर बनना है। पवित्र आत्मा बिगर कोई भी वापस जा नहीं सकते। मैं सभी को ले जाने आया हूं। आत्माओं को शिव की बारात कहते हैं। अब शिवबाबा शिवालय की स्थापना कर रहे हैं। फिर रावण आकर वैश्यालय स्थापन करती है। वाममार्ग को वैश्यालय कहा जाता है। बाबा के पास बहुत बच्चे हैं जो शादी कर भी पवित्र रहते हैं। सन्यासी तो कहते हैं यह हो नहीं सकता, जो दोनों इकट्ठे रह सके। यहां समझाया जाता है इसमें आमदनी बहुत है। पवित्र रहने से 21जन्मों की राजधानी मिलती है तो एक जन्म पवित्र रहना कोई बड़ी बात नहीं। बाप कहते हैं तुम काम चिक्षा पर बैठ बिल्कुल ही काले बन गए हो। कृष्ण के लिए भी कहते हैं सांवरा और गोरा। यह समझानी है इस समय की तुम्हारे लिए। बाकी कृष्ण को कोई सर्प ने डसा नहीं था। सर्प तो इस समय की है। एक/दो को डसते हैं। काम चिक्षा पर बैठने से सांवरा बन गया। फिर उनको गांव का .....भी कहा जाता है। बरोबर था ना। कृष्ण तो हो न सके। इनके ही बहुत जन्मों के अंत में बाप प्रवेश कर गोरा बनाते हैं। बाप ने समझाया है ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। भक्ति में आधा कल्प भटकना

पड़ता है। अभी तुमको भटकने से छुड़ाया जाता है। बाप को ही याद करना है। बाबा आप कितना मीठा हो। कितना मीठा वर्सा आप देते हो। हमको मानुष से देवता मंदिर लायक बनाते हो। ऐसे2 अपने से बातें करनी है। मुख से कुछ बोलना नहीं है। भक्तिमार्ग में हम आप माशुक को कितना याद करते आये हैं। अभी आप आय मिले हो। बाबा आप तो सबसे मीठे हो। आपको हम क्यों नहीं याद करेंगे?आप को प्रेम का ,शांति का सागर कहा जाता है। आप ही आकर वर्सा देते हो। बाकी प्रेरणा से कुछ भी मिलता नहीं है। बाप तो सम्मुख आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। यह पाठशाला है ना। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूं। यह राजयोग है। अभी तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन,सूलिवतन को जान गए हो। इतनी छोटी आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। है भी बना बनाया.....इनको कहा जाता है अनादि अविनाशी ड्रामा। ड्रामा फिरता रहता है। इसमें संशय की कोई बात ही नहीं। बाप सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज समझाते हैं। तुम स्वदर्शनचक्रधारी हो। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहता है। तो उससे तुम्हारे पाप कटते हैं। बाकी कृष्ण ने कोई स्वदर्शन चक्रधारी नहीं था, न कोई हिंसा ही किया। वहां तो न लड़ाई की हिंसा, न काम कटारी की हिंसा चलती। डबल अहिंसक होते हैं। बाकी और कोई युद्ध की बात ही नहीं। अब बाप उंच ते उंच ,फिर उंच ते उंच यह(ल.ना.) वर्सा। इन जैसा उंच बनना है। जितना तुम पुरुषार्थ करेंगे उतना उंच पद पावेंगे। कल्प2 वही तुम्हारी पढ़ाई रहेगी। अभी अच्छा पुरुषार्थ किया तो कल्प2 करते रहेंगे। जिस्मानी पढ़ाई से इतना उंच पद नहीं मिल सकता है। उंच ते उंच है यह ल.ना.। यह भी मनुष्य है ;परंतु दैवी गुण धारण करते हैं। इसलिए देवता कहा जाता है। बाकी 8/10 भुजा वाला कोई है नहीं। यह तो भक्तिमार्ग के बैठ खिलौने बनाई है। देवियों की कितनी पूजा करते हैं। उन्हों को रचते ,पालना करते फिर डुबो देते हैं। इसको कहा जाता है गुड़ियों का खेल। बाप कहते हैं कितने बेसमझ बन पड़े हो। भक्ति में बहुत रोते हैं। प्यार में आकर आंसू बहाते हैं। यहां तो बाप कहते हैं आंसू आया तो फेल। अम्मा मरे तो भी हलवा खावो.....(मिसाल) आजकल तो बम्बई में भी कोई बीमार पड़ते हैं वा मरते हैं तो ब्रह्माकुमारियों को बुलाते हैं कि आकर शांति दो। तुम समझाते हो आत्मा ने तो एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। इसमें तुम्हारा क्या जाता है? रोने से क्या फायदा? कहते हैं इनको काल खा गया। ऐसी कोई चीज है नहीं। यह तो आत्मा आपे ही एक शरीर छोड़ जाती है। अपने समय पर शरीर छोड़ भागती है। बाकी काल कोई चीज नहीं है। आत्मा कहती है मैं एक शरीर छोड़ जाय दूसरा लेती हूं। यहां तो गर्भमहल होता है। सजा की बात ही नहीं। वहां तुम्हारे कर्म–अकर्म हो जाते हैं। माया ही नहीं जो विकर्म हो। तुम विकर्माजीत बनते हो। पहले2 विकर्माजीत सम्वत् चलता है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है तो राजा विकर्म सम्वत शुरू होता है। इस समय जो विकर्म किये है। उन पर जीत पाते हो तो नाम रखा जाता है विकर्माजीत। फिर द्वापर से विकर्म राजा हो जाता। विकर्म करते रहते हैं। सूई पर अगर कट चढ़ी हुई होगी तो चकमक खैंचेंगे नहीं। जितना पापों की जंक उतरती जावेगी तो चकमक खैंचेगी। बाप तो पूरा प्योर है। तुमको भी प्योर बनना है। जैसे लौकिक बाप भी बच्चों को देख खुश होता है ना। बेहद के(का) बाप भी खुश होता है बच्चों के सर्विस पर। बच्चे लिखते हैं बाबा दीदी को एक दिन लिए भेज दो। बाप कहते हैं क्यों नहीं? आने–जाने में देरी थोड़े ही लगती है। बच्चे बहुत मेहनत भी कर रहे हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विसेबुल बच्चों को ही बुलाते हैं। तो एक/दो दिन के लिए भेज देते हैं। सर्विस पर तो हमेशा एवररेडी रहना है। तुम बच्चे हो पतितों को पावन बनाने वाले ईश्वरीय मिशन। अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो। बेहद का बाप है और तुम सब बहिन–भाई हो। बस। और कोई सम्बंध नहीं है। मुक्तिधाम में है ही बाप और तुम सब आत्माएं भाई2। फिर तुम सतयुग में जाते हो तो वहां एक बच्चा और एक बच्ची। बस। यहां तो बहुत सम्बंध होते हैं।

चाचा,काका आदि–आदि। वह तो है ही स्वीटहोम। मुक्तिधाम। इसके लिए मनुष्य कितना यज्ञ,तप आदि करते हैं ;परंतु वापस तो कोई जा नहीं सकते। गपोड़े बहुत मारते रहते हैं। सर्व का सदगतिदाता एक ही है। दूसरा न कोई। अभी तुम हो संगमयुग पर। यहां है ढेर मनुष्य। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। स्थापना फिर विनाश होना है। अभी अनेक धर्म होने कारण कितना हंगामा है। तुम 100परसेंट सालवेंट थे फिर 84जन्म बाद इनसालवेट बन पड़ते हो। सबसे जास्ती अजामिल ,अहिल्यायें कौन बनी हैं? जो पहले2 मिले थे। पहले सालवेंट फिर इनसालवेंट बने हैं। अब बाप आकर सबको जगाते हैं। अब जागो सतयुग आ रहा है। अब सत्य बाप ही तुमको 21जन्मों का वर्सा देते हैं। भारत ही सच्च खंड बनता है। बाप सच्चा खंड बनाते हैं। फिर झूठ खंड कौन बनाती है? 5विकारों रूपी रावण। रावण का कितना बड़ा बुत बनाते हैं। उसको जलाते हैं ;क्योंकि यह है नम्बरवन दुश्मन। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि कब से रावणराज्य हुआ है। बाप समझाते हैं आधा कल्प है रामराज्य। आधाकल्प है रावणराज्य। बाकी रावण कोई दुश्मन नहीं है जिसको मारना है। यह सब भक्तिमार्ग अंधश्रद्धा की बातें हैं। रावण को मारा फिर बंदर सेना ली। पुल बांधी। कितनी बातें बना दी हैं। यह नहीं समझते हैं कि सारा भातर(भारत) ही लंका है। यह तो बड़े ते बड़ा आइलैंड ठहरा। इन पर रावणराज्य है। बाप आकर रावणराज्य स्थापन करते हैं। फिर जयजयकार हो जाती है। वहां सदैव ही खुशी रहती है। यह है ही सुखधाम। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाप कहते हैं इस पुरुषार्थ से तुम यह बनने वाले हो। तुम्हारे चित्र भी बनाये थे। बहुत आये फिर सुनन्ती, कथन्ती, सुनावन्ती,भागन्ती हो गए। बाप कल्प2 आकर बच्चों को बहुत ही प्यार से समझाते हैं। बाप ,टीचर प्यार करते हैं। सदगुरू भी प्यार करते हैं। सदगुरू का निंदक ठौर न पाये। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। उन गुरुओं पास तो कोई एम ऑब्जेक्ट होती नहीं। यह कोई पढ़ाई नहीं है। यह तो पढ़ाई है। इनको कहा जाता है यूनिवर्सिटी कम हॉस्पिटल, जिससे तुम एवर हेल्दी बनते हो। वहां तो है ही झूठ। गाते भी हैं झूठी माया, झूठी काया ,झूठा सब संसार। सतयुग है ही सच खंड। वहां तो हीरे–जवाहरों के महल होते हैं। सोमनाथ का मंदिर भी भक्तिमार्ग में बनाया है। कितना धन था, जो फिर मुसलमान ने आकर लूटा। बड़े2 मस्जिद बनाई। बाप तुमको कारून का खजाना देते हैं। शुरू में ही सब तुमको सा. कराते आये हैं। अल्ला अवलदीन बाबा है ना। पहला2 धर्म स्थापन करते हैं। वह है डीटीज़्म। जो धर्म नहीं है वह फिर से स्थापन होता है। सभी जानते हैं प्राचीन सतयुग में इन्हों का ही राज्य था। उनके उपर कोई नहीं। डीटी राज्य को ही पैराडाइज कहा जाता है। अभी तुम जानते हो फिर औरों को बताना है। सबको कैसे पता पड़े, जो फिर ऐसा उलहना न दे कि हमको पता नहीं पड़ा। तुम तो सबको बतलाते हो। फिर भी बाप को छोड़कर चले जाते हो। यह हिस्ट्री मस्ट रिपीट। बाबा के पास जाते हैं तो बाबा पूछते हैं आगे कब मिले थे। कहते है। हां बाबा, 5000वर्ष पहले हम मिलने आये थे। बेहद का वर्सा लेने आये थे। कोई आकर सुनते हैं ,कोई को सा. होता है ब्रह्मा का तो वो याद आता है। फिर कहते हैं हमने तो यही रूप देखा था। बाप भी बच्चां को देख खुश होते हैं। तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हैं ना। वह लोग फिर शंकर के आगे जाकर कहते हैं झोली भर दो। अब सूक्ष्मवतन में यह सब बातें थोड़े ही होती हैं। बैल पर सवारी तो होती ही नहीं। सूक्ष्मवतन में कोई चीज़ होती नहीं। यह सब तुम सा. करते हो। बाकी आतमा कोई निकलकर जाती नहीं है। यह सब है सा.। ड्रामा में सा. होने का भी सब नूंध है। वह रिपीट होती रहती है। नौधा भक्ति करते हैं फिर सा. होता है। हनुमान आदि ऐसा है थोड़े ही। यह सब सा. होता है। यहां तो बहुतों को सा. होती है। साक्षात्कार में भी बड़ी सम्भाल चाहिए। बहुत लिखते हैं हमारे पास मम्मा की पधरामणी होती है। इसमें बड़ी खबरदारी चाहिए। कोई तो लिखते हैं मम्मा हमारे पास बैठी ही है। मैं लिख देता हूं भूत बैठा है, न कि मम्मा। वह कहे नहीं। मम्मा हमको रात–दिन पढ़ाती है। बास आपका हमको परवाह नहीं है। बाबा साफ लिख देते हैं

यह भूत है। फिर मुरली बंद कर देता हूं। फिर लिखते हैं बाबा अब तो मम्मा चली गई।....तो यह सब (माया) की प्रवेशता होती है। फिर तरस पड़ता है। यह पढ़ाई है। सात दिन का कोर्स लेकर फिर कहां भी रह कर मुरली के आधार पर चल सकते हैं। सात दिन में इतना समझ जावेंगे जो फिर मुरली से समझ जावेंगे। तो बाप सब राज समझाते रहते हैं। बाप तो बच्चों को अच्छी रीत पढ़ाकर ,सिखलाकर उंच चढ़ाते हैं। वानप्रस्थ अवस्था हुई फिर गुरू पास चले जाते हैं। फिर कुटुम्ब में नहीं आना होता है। फिर समझते हैं गुरू हमको भगवान पास ले जावेंगे। ऐसा उनको निश्चय दिलाते हैं। यह तो बाप भी है, सच्चा सदगुरू भी है। वह गुरूलोग तो ढेर के ढेर हैं। बनारस में पढ़कर बहुत टाइटिल लेते हैं। इसलिए बाबा ने कहा था बनारस में सेंटर्स स्थापन कर दो। विद्युत मंडली को पकड़ो। बहुत झूठे टाइटिल देते हैं। तुम बच्चों को बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। तुम लिखते हो 9वर्ष में विश्व में शांति हो जावेगी। सारे विश्व पर इन ल.ना. का राज्य होगा। एक राज्य,एक धर्म ,एक भाषा होगी। बाकी इतने सब धर्मों की एक भाषा कैसे होगी। यह बाप की एक ही हट्टी है। आखिर सब जावेंगे कहां? सन्यासी भी आवेंगे। अभी अगर कोई आ जाये तो रोवलेशन(रिवोल्यूशन) हो जाये। सब उन पर फट नैलत डालने लग पड़ेंगे। तुम बच्चों की विजय तो होनी ही है। इसलिए बाबा ने यह गीता का भगवान कौन वाला चित्र बनाया है। श्रीकृष्ण जो 84जन्म लेने वाला है नई दुनियां का फर्स्ट प्रिंस है, वह या पुनर्जन्म रहित शिवबाबा है गीता का भगवान ;क्योंकि गीता ही मुख्य माई–बाप है। गीता माता कहते हैं ना। गीता सुनाने वाला पिता है शिवबाबा। मात–पिता गीता झूठी तो सब शास्त्र झूठे हो जाते हैं। झूठे शास्त्र पढ़ते2 दुर्गति को पा लिया है। झाड़ आस्ते2 बड़ा होता जाता है। फिर तूफान गलता(लगता) है तो फल गिर पड़ते हैं। तभी बाप समझाते हैं कि ऐसे मीठे बाप को कब फार्कती नहीं देनी है। माया से खबरदार रहना है। चलते2 माया जोर से थप्पर मार देती है। गीत भी है ना छोटा सा दीवा को तूफान लगा। तुम छोटे दीवे हो। तुम्हारे में ज्ञान घृत पड़ रहा है। वहां तुम्हारी .....प्योर होने से आयु भी बड़ी होती है। तुम्हारे नई सृष्टि (में) 5तत्व भी नये होते हैं। सभी कुछ नया चाहिए ना। तुम सा. करते थे वहां फल कितने अच्छे2 होते हैं। सूभी रस पीकर आते थे। वही आत्मा जो सतोप्रधान सो तमोप्रधान पुजारी बनी है, फिर पूज्य बनते हैं। पूज्य सो पुजारी ,पावन सो पतित बनते हैं। अच्छा, मीठे2 रुहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।